॥ ओ३म् ॥

"आर्य" मीमांसा ।

जिसको

पञ्जाब देशान्तर्गत हुशियारपुर

प्रान्तान्तर्गत ऐहापुर नगर निवासी

हिसार आर्यसमाज

के

मुख्य उपदेशक

पं० अमीचन्द्र शर्म्मा

ने रचा ।

तथा

वजीरचन्द्र शर्म्मा अध्यक्ष वैदिक पुस्तकालय

लाहौर ने बाम्बे मैशीन प्रेस लाहौर में छपवाया ।

वैक्रमी सम्वत् १९७३ २२ अगस्त १९१६

द्वितीयवार १००० [मूल्य ⁄)

पुस्तकालय
4918

* ओ३म् *

॥ भूमिका ॥

सब सज्जनों को विदित हो कि महाभारत के युद्ध के पीछे जब इस भारतवर्ष में अविद्या छाई और परोपकारी उपदेशकों का अभाव हुआ, तब ब्राह्मणादि चारों वर्ण अपने २ कर्म्मों से हीन होगए, और वेद विरुद्ध अनेक मत प्रचलित होने के कारण भारतखण्ड में बड़ा भारी विरोध बढ़ गया पश्चिम देशों के महम्मदी लोग इस अवसर को पाकर भारतखण्ड पर चढ़ आए, कई बार इस देश को लूटा, राजों महाराजों को जीत उन के राज्य पर अपना अधिकार जमाया, इस भाग्य कई राजाओं ने अपने २ राज्य बचाने के हेतु महम्मदी बादशाहों को अपनी कन्याएं देदीं, महम्मदी बादशाहों के समय में भारतवासी बहुत लोग महम्मदी होगए, सारे देश में अरबी, फारसी और उर्दू की पाठशालाएं नियत होगईं सब लोग जीविकार्थ उक्त भाषाओं के पढ़ने में प्रवृत्त हुए,

इस देश की मातृभाषा संस्कृत लुप्त प्राय होगई, न्यायालयादि राज्य सम्बन्धी कार्यों में अरबी, फारसी और उर्दू विषय होगई, लोग अपनी मातृभाषा संस्कृत को छोड़ अरबी, फारसी की ओर झुके, ७०० सौ वर्ष के लगभग भारतवर्ष में महम्मदी बादशाहों का राज्य रहा, अरबी, फारसी का इतना प्रचार हुआ कि बाल, वृद्ध, पुरुष, स्त्री सब की जिह्वा पर उक्त भाषाओं के शब्द बस गए, भारतवासी लोग अपना प्राचीन आर्य्य नाम भुलाकर अपने आपको हिन्दू कहने लग गए, यह हिन्दू नाम महम्मदी बादशाहों के समय से प्रचलित निश्चित होता है क्योंकि संस्कृत के किसी प्राचीन वा नवीन पुस्तक में हिन्दू शब्द नहीं मिलता, फारसी की किताबों में तो हिन्दू शब्द बहुधा मिलता है इस से यह सिद्ध हुआ कि हिन्दू शब्द संस्कृत का नहीं यदि हिन्दू शब्द संस्कृत भाषा का होता तो संस्कृत के प्राचीन और नवीन ग्रन्थों में अवश्य आता आर्य्य शब्द संस्कृत के प्राचीन और नवीन ग्रन्थों में बहुधा मिलता है इसलिए हमारा प्राचीन नाम आर्य्य है

हिन्दू नहीं। अब परमेश्वर की कृपा से श्रीमति राजराजेश्वरी महारांणी विक्टोरिया के शासन समय में श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य्य स्वामी दयानन्दसरस्वतीजी ने वेदों और शास्त्रों का प्रचार किया तो हमको अपने प्राचीन आर्य्य नाम का ज्ञान हुआ।

धन्यवाद है उस जगतपति का जिस ने हमारे उद्धार के लिए ऐसा महा पुरुष भेजा, धन्यवाद है उस महा पुरुष का जिस ने हमारे उद्धार के निमित्त अपना जीवन लगा दिया, मैं ने यह आर्य्य मीमांसा नाम पुस्तक रचा है सब सज्जन लोग पक्षपात को छोड़ इस पुस्तक को आद्योपान्त पढ़ें और मेरे परिश्रम को सफल करें।

ओं शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

॥ इति भूमिका ॥

परमेश्वर ने विश्वभाव का जो सकल रूप रचा है वह हमारे लिए उत्पन्न कर, और दस्यु लोगों को दण्ड दो ॥२॥

ससानात्यां उत सूर्य ससानेन्द्रः ससान पुरुभोजसंगाम् । हिरण्ययमुतभोगं ससान हत्वी दस्यून् प्रार्यं वर्ण मावत् ॥ ३ ॥

ऋ० म० ३ अ० ३ सू० ३४ मं० ९ ।

अर्थ–राजा उत्तम २ घोड़ों, सूर्य के समान तेज वाले, और बहुत लोगों की पालना करने वाले मनुष्यों, भूमि, और सुवर्णादि भोग्य पदार्थों को छांट २ कर रखे, दस्यु लोगों को मार वा दण्ड देकर स्वीकार करने योग्य आर्य पुरुष की रक्षा करे ॥ ३ ॥

अहं भूमि मददा मार्यायाहं वृष्टिं दाशुषे मर्त्याय अहमपोअनयं वावशाना ममदेवासो अनुकेतमायन् ॥ ४ ॥

ऋ० मं० ४ अ० १ सू० २६ म० २ ।

अर्थ–परमात्मा उपदेश करता है कि हे मनुष्यों ! मैं आर्य पुरुष को भूमि का राज्य देता हूं, दान शील पुरुष

को वर्षा देता हूं, मैं ही सब को प्राण देता हूं, मेरी कामना करते हुए विद्वान् लोग बुद्धि को प्राप्त होते हैं ॥४॥

आपक्यासो भलानसोभनन्तालि नासो विषाणिनः शिवासः । आयोनयत् सधमा आर्य्यस्यगव्या तृत्सुभ्यो अजगन्यु धातून् ॥५॥

ऋ० मं० ७ अ० २ सू० १८ मं० ७ ।

अर्थ—परमेश्वर उपदेश करता है कि हे राजन् ! जो पाक विद्या में कुशल, संभाषण करने के योग्य अर्थात् जिनकी वाणी उत्तम है और जो शुभ नासिका वाले, अर्थात् जिनका मुख और नाक सुडौल बने हुए हैं, जो भृंग के समान तीक्ष्ण स्वभाव वाले मनुष्य हैं, और जो मंगल स्वभाव वाले मनुष्य तुझे उपदेश देते हैं और जो आर्य पुरुष की वाणी को उत्तम स्थान में पहुंचाता है जो हिंसक पीचों के साथ युद्ध करने के लिए मनुष्यों को प्राप्त होते हैं तू उनकी रक्षाकर ॥ ५ ॥

प्रियं माकुरु देवेषु प्रियं राजसु माकृणु ।
प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्रउत आर्ये ॥६॥

अथर्व कां० १९ । अनुवाक ७ सू० ६२ मं १ ।

अर्थ–मनुष्य ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना करे कि, हे परमात्मन् ! आप मुझे देवों, राजाओं, सब देखने वाले जीव, शूद्र तथा आर्य पुरुष के बीच या समीप प्रिय कीजिये ॥६॥

पाठकगण ! मैंने वेदों के यह थोड़े से प्रमाण दिये हैं जिन से यह सिद्ध हुआ कि आर्य नाम प्राचीन है नवीन नहीं साथ ही यह भी निश्चय होगया कि आर्य नाम बड़ा प्रतिष्ठित है, हमारा नाम आर्य ही था संस्कृत के लुप्त होजाने और महम्मदी बादशाहों के शासन समय में, अरबी, फारसी आदि भाषाओं के प्रचार के बढ़ जाने से भूल से अप्रतिष्ठित हिन्दू नाम हमारा पड़ गया था, जैसा कि आज कल भी हमारा नाम काला पड़ गया है यद्यपि काला नाम अच्छा नहीं और नवीन भी है तथापि भारतवासी अपने आप को काला कहते हैं, सौ या दो सौ वर्ष के पीछे यह नाम पुराना भी होजावेगा और हिन्दू लोग अपने आप को काला कहकर प्रसन्न भी हुआ करेंगे। एवं हिन्दू शब्द नवीन भी है फिर भी भारतवासी लोग अपने आप को हिन्दू कहकर प्रसन्न होते और हिन्दू नाम

को आर्य नाम की अपेक्षा प्राचीन भी बतलाते हैं और आर्य नाम से चिढ़ते और हिन्दू नाम से बड़े प्रसन्न होते हैं, हिन्दू शब्द के अर्थ आगे जाकर लिखे जाएंगे, अब मैं आर्य नाम की सिद्धि के अर्थ वेदांग में यास्कमुनिकृत निरुक्त ग्रन्थ का प्रमाण लिखता हूं। न्याय दृष्टि से पढ़िये।

शवतिर्गतिकर्म्माकंबोजेष्वेव भाष्यते,कंबोजाः कंबलभोजा कमनीय भोजावाकंबलः कमवीयो भवति विकारमस्यार्येषु भाषन्ते शव इति। दातिर्लवणार्थे प्राच्येषु दात्रमुदीच्येषु ॥ १ ॥

निरुक्त अ० २ पा० १ खं० ४।

अर्थ—यास्कमुनि कहते हैं कि गति अर्थ के लिए शवति प्रयोग कंबोज देशों वा कंबोज लोगों में ही बोला जाता है, जो लोग कंबलों का व्यवहार करते हैं अथवा जिनका व्यवहार कमनीय है उनको कंबोज कहते हैं, कंबल कमनीय होता है सुन्दर और अधिक शीत निवारक होने हेतु सब लोग इसकी कामना करते हैं आर्य लोगों में

इसका विकार "शव" ऐसा बोला जाता है। पूर्व के देशों में रहने वाले लोगों में काटने अर्थ में दासि बोलते हैं और उत्तर के देशों में रहने वाले लोगों में काटने अर्थ में दाप बोलते हैं ॥ ७ ॥

भाव—सज्जनवर्ग ! निरुक्त के इस प्रमाण से भी यही सिद्ध हुआ कि आर्य शब्द आर्य जाति के लिए आया है।

अब व्याकरण में प्रमाण देखो।

अजर्यं संगतम् ॥ अ० अ० ३ पा० २ सू० ११५।

अथ सिद्धान्त कौमुदी।

नञ् पूर्वाज्जीयतेः कर्त्तरियत् संगतंचेद् विशेष्यम् । नजीर्यतीत्यजर्यम् । तेन संगत मार्येण रामाजर्यं कुरुद्वहम् इति भट्टिः ॥

सि० कौ० छा० मु० पृ० २९१ पं० २८। १

अर्थ—नञ् पूर्वक जॄ धातु से कर्त्ता अर्थ में यत् प्रत्यय होता है यदि संगत शब्द विशेष्य हो, जो जीर्ण न हो उसे अजर्य कहते हैं, दीर्घबाहु राक्षस रामचन्द्र जी को कहता है कि हे

रामचन्द्र ! आप उस आर्य सुग्रीव के साथ अक्षय मैत्री शीघ्र करलें ॥ १ ॥

भाव–यह अष्टाध्यायी का सूत्र है इस पर यह सिद्धान्त कौमुदी टीका है, उस में अजर्य प्रयोग की सिद्धि के उदाहरण के लिए भट्टि काव्य का प्रमाण दिया है उस में दीर्घबाहु राक्षस ने सुग्रीव को आर्य कहा है इस से यह भी सिद्ध होगया कि सुग्रीव पुरुष था बन्दर नहीं था क्योंकि वेदों और शास्त्रों में आर्य जाति मनुष्यों की ही लिखी है बन्दरों की नहीं यदि सुग्रीव को बन्दर मानोगे तो भट्टि काव्य में सुग्रीव को आर्य लिखना मिथ्या होगा, हां उन मनुष्यों का ही किसी कारण विशेष से वानर नाम पड़ गया हो तो असम्भव नहीं, क्योंकि आज कल भी पञ्जाब देश में सूरी जाति के खत्री हैं, वे मनुष्य ही हैं सूर जाति के पशु नहीं यदि कोई पुरुष उनको सूर जाति के पशु कहेगा, वह मूढ़ समझा जावेगा इसी भांति जो पुरुष सुग्रीव को पशु जाति का बन्दर कहेगा वह भी मूढ़ समझा जावेगा, देखो हरिआणा देश में मोर, मूर,

गीदड़ और दांडे गोत्र के जाटों के कई गांव बसते हैं मैंने देखे और सुने भी हैं वे मनुष्य ही हैं यदि कोई पुरुष अपनी अज्ञता से उनको मोर पक्षी, सूर, शृगाल और बैल जाति के पशु समझ ले तो उसका अज्ञान है हे पौराणिक मतावलंबिओ वा अन्यमतानुयायीओ ! मेरे बनाए आर्य मीमांसा नाम पुस्तक पढ़े पीछे सुग्रीव और हनुमान् आदि रामचन्द्र के प्रिय मित्र भक्त सेनापतिओं को पशु जाति के बन्दर मत कहना ।

पदास्वैरि वाह्यापक्ष्येषुच ॥ ९ ॥

अष्टा० अ० ३ पा० १ सू० ११९ ।

अत्र सिद्धान्त कौमुदी आर्यैर्गृह्यते इति ।
आर्यगृह्यः तत् पक्षाश्रित इत्यर्थः ॥

सि० कौ० छा० मु० स० १८८७ पृ० २९३ ॥२॥

अर्थ–पद, अस्वैरी वाह्या और पक्ष्य अर्थों में गृह धातु से यत् प्रत्यय होता है, उदाहरण जैसे आर्यैर्गृह्यते इति आर्य गृह्यः, आर्य पुरुषों करके जो ग्रहण किया जावे

उसे आर्यकृतः कहते हैं, उन आर्य लोगों के पक्ष के आश्रित ऐसा अर्थ निकला है ॥ २ ॥

भाव—यह अष्टाध्यायी का सूत्र है इस पर सिद्धान्त कौमुदी टीका है कौमुदी के कर्त्ता ने अपनी कौमुदी में कृदन्त प्रकरण म इस सूत्र के उदाहरण में आर्यकृतः प्रयोग दिखलाया है जिस से स्पष्ट विदित होगया है कि आर्य नाम आर्य जाति के मनुष्यों के लिए आया है ॥

आर्यस्य स्वाम्याख्याचेत् । (शांतनवाचार्यकृत स्वर प्रक्रिया पा० १)

अर्थ—यदि स्वामी अर्थ का वाची आर्य शब्द हो तो उसका अन्त वाला स्वर उदात्त होता है ॥

सि० कौ० छा० मुं० पृ० ३८० । १ । ११

आर्यो ब्राह्मण कुमारयोः ॥

अ० अ० ६ पा० २ सू० ५८ स्वर प्र० ।

अत्र सिद्धान्तकौमुदी-आर्यकुमारः, आर्यब्राह्मणः॥

सि० कौ० छा० मुं० पृ० ३८१ ॥४॥

अर्थ–यदि आर्य शब्द कर्म्मधारय समास में कुमार और ब्राह्मण शब्दों के साथ समस्त हो तो आर्य शब्द का स्वर प्रकृति स्वर ही रहता है जैसे आर्यकुमारः, आर्यब्राह्मणः, जो आर्यकुमार हो तो उसे आर्यकुमारः और जो आर्यब्राह्मण हो तो उसे आर्यब्राह्मणः कहते हैं ॥४॥

केवलमामकभागधेयपापापरसमानार्यकृत सुमंगलभेषजाच्च ॥ अ० अ० ४ पा० १ सू० ३० ।

अत्र सिद्धांतकौमुदी–एभ्यो नवभ्यो नित्यंङीप स्यात् संज्ञाछन्दसोः ॥

केवली, मामकी, भागधेयी, पापी, अपरी, समानी, आर्यकृती, सुमंगली, भेषजी ॥

सि० कौ० छा० मुं० पृ० ५० पं० २४ ॥५॥

अर्थ–केवल, मामक, भागधेय, पाप, अपर, समान, आर्यकृत, सुमंगल और भेषज इन नौ शब्दों से आगे नित्यङीप् प्रत्ययहो संज्ञा और वेद में ॥ आगे अर्थ स्पष्ट है । अब स्मृतिओं में मनुजी के प्रमाण लिखता हूं ।

जातो नार्यामनार्यायामार्यादार्यो भवेद्गुणैः ॥
जातोऽप्यनार्यादार्यायामनार्य इति निश्चयः॥
सुबीजं चैव सुक्षेत्रे जातं सम्पद्यते यथा। तथा-
र्याज्जात आर्यायां सर्वं संस्कार मर्हति ॥

मनु० अ० १० श्लो० ६७–६९ ॥ १ ॥

अर्थ–माता अनार्या हो और पिता आर्य हो उनसे जो सन्तान उत्पन्न होती है वह अपने गुणों से आर्य हो जाती है। माता चाहे आर्या हो और पिता अनार्य हो उनसे जो सन्तान उत्पन्न होती है वह निश्चय करके अनार्य होती है। उत्तम बीज उत्तम खेत में बोया जावे तो अच्छा उपजता है वैसेही पिता भी आर्य हो और माता भी आर्या हो उनसे जो सन्तान उत्पन्न होती है वह वेदोक्त सब संस्कारों के करने के योग्य होती है ॥ २ ॥

अत ऊर्ध्वं त्रयोप्येते यथाकालमसंस्कृताः सावित्र
पतिता ब्रात्या भवंत्यार्यविगर्हिताः ॥ आसप्त-

द्वात्तु वैपूर्वा दासमुद्रात्तु पश्चिमात् ॥ तयोरेवां-
तरं गिर्योरार्यावर्त्तं विदुर्बुधाः ॥

मनु० अ०, २ श्लो० २९, २२ ॥ २ ॥

अर्थ– ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीनों वर्णों के बालक यदि अपने २ समय पर यज्ञोपवीत संस्कार न करें अर्थात् क्रम से १६, २२, २४, वर्ष से ऊपर के होजावें और जनेऊ धारण न करें तो वे गायत्री मंत्र से हीन होकर व्रात्य संज्ञा वाले होजाते हैं और आर्यों में निन्दनीय होजाते हैं ॥ पूर्व के सागर से लेकर पश्चिम के सागर तक हिमालय और विन्ध्या के बीच जितनी भूमि है उसको विद्वान् लोग आर्यावर्त्त कहते हैं वा जानते हैं ॥

भाव–सृष्टि उत्पत्ति काल में आर्य लोग प्रथम इसी देश में बसे थे और आर्य लोगही इस देश के स्वामी थे इसलिये इस देश का नाम आर्यावर्त्त हुआ, यद्यपि इस देश में दस्यु लोग भी बसते थे और बसते हैं तथापि इस देश का नाम आर्यावर्त्त बोला जाता था क्योंकि इस देश के स्वामी आर्य लोग ही थे, जैसे आज कल भी राजपूतों और जाटों के गावों में चूड़े, चमार, धोबक, नाई धोबी,

छीपी, मोची और धीवर लोग बसते हैं फिर भी वे गांव राजपूतों और जाटों के ही माने जाते हैं नाई और धोबी आदि के नहीं क्योंकि इन गांवों के स्वामी राजपूत और जाट हैं।

अब इतिहासों में बाल्मीकि रामायण देखो। एक समय में नारदजी बाल्मीक जी के आश्रम पर गए, बाल्मीक ने नारद से पूछा कि हे नारद ! इस समय भूमि पर प्रतापी आर्य राजा कौन है ? नारद ने उत्तर में कहा कि इस समय रामचन्द्र जी प्रतापी आर्य राजा हैं, बाल्मीकि ने कहा कि हे नारद ! रामचन्द्र जी का जीवन चरित्र आप कृपा करके मुझे सुनायें। नारद ने रामचन्द्र जी का जीवन चरित्र सुनाते समय यह वचन कहा है॥

सर्वदाऽभिगतः सद्भिः समुद्र इवसिंधुभिः ।
आर्यः सर्वसमश्चैव सदैव प्रियदर्शनः ॥ १ ॥

बाल्मी० बा० कां० सं० १ श्लो० १६।

अर्थ—रामचन्द्र के पास सत्पुरुष सदा चारों ओर से

आते हैं जैसे समुद्र में नदियां । रामचन्द्र आर्य्य हैं और सबको सम जानता है और सदा ही उसका दर्शन प्रिय है॥

प्राच्योदीच्याः प्रतीच्यश्च दाक्षिणात्याश्च भूमिपा
म्लेच्छाश्चार्याश्च ये चान्ये वनशैलान्तवासिनः ।

वाल्मी० अयो० कां० सं० ३ श्लो० २५ ।

अर्थ—पूर्व, उत्तर, पश्चिम, दक्षिण के राजे, म्लेच्छ और आर्य,बन और पर्वतों के रहने वाले और लोग भी आये

भाव—मित्रगण ! यह उस समय का प्रसंग है कि जब रामचन्द्र जी युवा हुए और दशरथ ने रामचन्द्र जी को राजतिलक देने के लिये उत्सव रचा, उसमें सब ओर के राजे तथा अधिकारी और प्रजा इकट्ठी हुई देखो और पढ़ो । जब केकैई ने राजा दशरथ से दो वर मांगे कि रामचन्द्र को १४ वर्ष बनवास और भरत को राजतिलक मिले तब राजा दशरथ ने अति दुःखित हो केकैई से यह बचन कहा ।

अनार्य इति मामार्याः पुत्रविक्रायिकं ध्रुवम् ।
विकरिष्यंति रथ्यासु सुरापं ब्राह्मणं यथा ॥३॥

वाल्मी० अयो० कां० सं० १२ श्लो० ७८ ॥

अर्थ–राजा ने केकेई से कहा कि हे केकेई ! आर्य लोग मुझको जो पुत्र को दुःख देने वाला हूं अनार्य कहेंगे। गलियों में लोग मुझे धिक्कार कहेंगे जैसे मद्यप ब्राह्मण को।

जब रामचन्द्र जी को वनवास की आज्ञा होचुकी और लक्ष्मण जी साथ जाने को तयार हुए तब रामचन्द्र ने लक्ष्मण को कहा कि हे लक्ष्मण ! यदि तू भी मेरे साथ वन में चला गया तो पीछे कौशल्या की कौन पालना करेगा इसके उत्तर में लक्ष्मण बोला।

कौशल्या बिभृयादार्य ! सहस्रं मद् विधानपि।
यस्याः सहस्रं ग्रामाणां सं प्राप्तमनुजीविनम्॥४॥

वाल्मी० अयो० कां० सं० ३१।

अर्थ–हे आर्य ! कौशल्या मेरे जैसे हज़ारों की पालना कर सक्ती है। जिसको हज़ार गांव जीविकार्थ मिले हुएहैं।

जब रामचन्द्र वन को जाने के समय पिता से मिलने गए तब राजा दशरथ ने अपने मंत्री को कहा कि कौशल्या और सुमित्रा को बुलाओ, मंत्री राजा की आज्ञा को पाकर अन्तःपुर में गया वहां यह वचन कहा।

सेऽन्तः पुरमतीत्यैवस्त्रियस्ता वाक्यमब्रवीत् ।
आर्योह्वयति वो राजा गम्यतां तत्र माचिरम्॥५॥
वाल्मी० अयो० कां० सं० ३४ श्लो० ११।

अर्थ–उस मंत्री ने अन्तःपुर में जाकर उन स्त्रियों को कहा कि तुमको आर्य राजा बुलाता है चलो देरमत लगाओ।

रामचन्द्र, लक्ष्मण और सीता चित्रकूट पर्वत पर निवास कर रहे थे कि भरत उनको मिलने गया, रामचन्द्र ने भरत से पिता के कुशल क्षेम का समाचार पूछा उसके उत्तर में भरत ने यह वचन कहा है।

आर्य! तातः परित्यज्य कृत्वा कर्म्म सुदुष्करम् ।
गतः स्वर्गं महाबाहुः पुत्रशोकाभिपीड़ितः ॥६॥
वाल्मी० अयो० कां० सं० १० श्लो० ५।

अर्थ–हे आर्य! महाबाहु पिता हम सबको त्याग, अतिदुष्कर कर्म्म करके, पुत्रों के शोक से पीड़ित होकर स्वर्ग को प्राप्त होगये अर्थात् मर गया।

पुनः भरत ने प्रार्थना की कि हे भ्रातः! आप अयोध्या में चलें और राज्य करें, तब रामचन्द्र ने यह वचन कहा।

यत्राहमपि तेनैव वियुक्तः पुण्यकर्म्मणा ।
तत्रैवाहं करिष्यामि पितुरार्यस्य शासनम् ॥७॥

वाल्मी० अयो० कां० सं० १०५ श्लो० ३७

अर्थ—हे भरत ! उस पुण्यकर्म्मा पिता ने जिस स्थान में मुझे नियुक्त किया है मैं वहीं उस आर्य पिता की आज्ञा का पालन करूंगा ।

रामचन्द्र का यह वचन सुन भरत बोला ।

अद्यार्य मुदितः सन्तु सुहृद स्तेभिषेचने ।
अद्य भीताः पलायन्तु दुष्प्रदास्तोदिशोदश ॥८॥

बाल्मी० अयो० कां० सं० १०८ श्लो० २८५ ।

अर्थ—हे आर्य ! आज आपको राजतिलक होने पर आपके मित्र प्रसन्न हों । और आज आपके रिपु चारों ओर को भयभीत होकर भाग जाएं ।

भरत ने रामचन्द्र जी को अयोध्या में लेजाने के लिये बहुत प्रार्थना की जब फिर भी रामचन्द्र जी ने अयोध्या में जाना स्वीकार न किया तो पुनः भरत ने कहा ।

अधिरोहार्य ! पादाभ्यां पादुके हेमभूषिते ।
एते हि सर्वलोकस्य योगक्षेमं विधास्यतः ९

बाल्मी० अयो० कां० सं० ११२ श्लो० २१ ।

अर्थ–हे आर्य ! सुवर्ण से भूषित खड़ाओं पर अपने चरण रक्खें । यह खड़ाओं सारे लोक का योग और क्षेम करेंगे ।

भरत ने रामचन्द्र की खड़ाओं लेकर नदीग्राम में पहुंच अपनी प्रजा से यह वचन कहा ।

छत्रं धारयत क्षिप्रं आर्यपादा विमौ मतौ ।
आभ्यांराज्ये स्थितोधर्म्मः पादुकाभ्यां गुरोर्मम १०

बाल्मी० अयो० कां० सं० ११९ श्लो० १६ ।

अर्थ–हे प्रजा के लोगो ! ये खड़ाओं आर्य रामचन्द्र जी के चरण माने गये हैं इसलिए इन पर शीघ्र छत्र करो मेरे बड़े भाई रामचन्द्र जी की इन खड़ाओं से राज्य में धर्म्म स्थित होगा

तदनन्तर रामचन्द्र जी अत्रि मुनि के आश्रम पर

पहुंचे, मुनि की स्त्री अनुसूया ने जो अत्यन्त बृद्धा थी सीता को यह उपदेश किया।

दुःशीलः कामवृत्तो वा धनैर्वा परिवर्जितः।
स्त्रीणा मार्यस्वभावानां परमं दैवतं पतिः ॥११॥

वाल्मी० अयो० कां० सं० ११७ श्लो० १७।

अर्थ–हे सीते! पति दुष्ट स्वभाव वाला हो, अथवा धन से रहित हो आर्य स्वभाव वाली स्त्रियों का पति ही परमदेवता है।

एक समय में रामचन्द्र, लक्ष्मण और सीता ये तीनों पंचवटी में बैठे हुए थे कि दैवयोग से रावण की भगिनी शूर्पणखा घूमती २ लक्ष्मण के समीप आकर बोली कि हे भद्र! आप मुझे अपनी भार्या बनालें, उसके उत्तर में लक्ष्मण ने यह कहा।

कथं दासस्य मे दासी भार्या भवितु मिच्छसि।
सोहं मार्येण परवान् भ्रात्रा कमलवर्णिनि ॥१२॥

वाल्मी० अ० कां० सं० १ श्लो० ९।

अर्थ–हे कमल वर्णिनि ! मैं तो आर्य भाई रामचन्द्र के अधीन हूं। तू मुझ दास की दासी स्त्री क्यों होना चाहती है।

जब रामचन्द्र जी मारीच राक्षस को मार कर चले आरहे थे तो मार्ग में लक्ष्मण जो मिले। रामचन्द्र जी ने लक्ष्मण से पूछा कि आप जानकी को अकेला छोड़कर क्यों आए ? इसपर लक्ष्मण जी ऐसा बोले।

आर्येणैव पराक्रुष्टं लक्ष्मणेति सुविस्वरम् ।
परित्राहीति यद् वाक्यं मैथिल्यास्तच्छ्रुतिंगतम् १३

बाल्मी० बनकां० सं० ५९ श्लो० ७।

अर्थ–हे आर्य ! आपही ने ऊंचे स्वर से बोल दिया था कि हे लक्ष्मण ! मेरी रक्षा कर यह बोल जानकी के कान में पहुंच गया।

सीता ने मुझे बार २ कहा कि तू भाई की रक्षार्थ जा इस पर मैंने सीता से यह वचन कहा।

विगर्हितं च नीचं च कथमार्योऽभिधास्यति
त्राहीति वचनं सीते यस्त्रायेत त्रिदशानपि १४

बाल्मी० बनकां०

अर्थ-हे सीते ! आर्य रामचन्द्र ऐसा निंदित और नीच बचन कि हे लक्ष्मण मेरी रक्षाकर कैसे कह सक्ता है जो कि देवताओं की भी रक्षा करता है ।

एक दिन रामचन्द्र जी और लक्ष्मण जी सीता को ढूंढते २ पंपासर पर पहुंचे, रामचन्द्र जी सीता के वियोग से अति व्याकुल हो रहे थे तब लक्ष्मण ने रामचन्द्र जी को यह बचन कहा ।

उत्साहो बलवान् आर्य ! नास्त्युत्साहात परं बलम्
सोत्साहस्य हि लोकेषु न किंचिदपि दुर्लभम् १५

वाल्मी० कि० कां० सं० १ श्लो० १२१ ।

अर्थ-हे आर्य ! उत्साह बड़ा बलवान् है उत्साह से बढ़कर और कोई बल नहीं है । उत्साही पुरुष को लोक में कुछ भी दुर्लभ नहीं है ।

एक समय में रावण ने सीता से कहा कि तू मेरी राणी होजा, इसके उत्तर में सीता ने यह वचन कहा ।

इमे ते नयने क्रूरे विकृते कृष्णपिंगले ।
क्षितौ न पतिते अकस्मात ममनार्य निरीक्षतः १६

वाल्मी० सु० कां० स० २१ श्लोक १८ ।

अर्थ—हे अनार्य ! रावण ! मुझको देखते हुए तेरे यह क्रूर, विकृत, काले और पिंगले लोचन भूमि पर क्यों नहीं गिर पड़े॥

एक समय में सीता अशोक बन में बैठी हुई थी कि रावण रामचन्द्र का बनावटी सिर काट कर सीता के पास लाया और यूं कहने लगा कि हे सीते ! देख मैं तेरे पति का सिर काट लाया हूं। अब तू मेरी राणी हो जा, तिस पर सीता विलाप करती है।

आर्येण किन्नु केकेय्याःकृत रामेण विप्रियम्।
यन्मया चीरवसनं दत्वा प्रव्राजितो वनम्॥
अहं दाशरथेनोढा मोहात् स्वकुलपांसनी।
आर्यपुत्रस्य रामस्य भार्या मृत्युरजायत॥१७॥

बाल्मी० लं० कां० स० ३२ श्लोक० ५२९।

अर्थ—आर्य रामचन्द्र ने केकेयी का क्या अपराध किया था कि जो मेरे साथ चीरवस्त्र पहना कर बन में निकाला गया। दशरथ के सुत ने अपनी कुल को धूलि में मिलाने वाली मुझको ब्याहने में धोखा खाया है, क्योंकि

मैं भार्य्या होकर आर्यपुत्र रामचन्द्र की मृत्यु का कारण बन गई हूं।

जब रावण रामचन्द्र जी से लड़ने आया तो लक्ष्मण ने रामचन्द्र जी से कहा कि हे भ्रातः! रावण से मैं लड़ूंगा।

काममार्यः सुपर्याप्तो वधायास्य दुरात्मनः।
विधमिष्याम्यहं नीचं अनुजानीहि मां विभो१८
बाल्मी० लं० कां० सं० ५९ श्लोक० १९।

अर्थ—हे विभो! यद्यपि आप इस दुष्ट को मारने के लिये अच्छी प्रकार समर्थ हैं तथापि आप मुझे आज्ञा दीजिये मैं इस दुष्ट को नष्ट करूंगा।

एक दिन रावण का पुत्र मेघनाद रणरङ्ग में युद्ध करने आया, उसने माया की सीता बनाकर अपने रथ में बांधकर कुछ काल में हनुमान के सामने सीता का सिर काट लिया. इस बात को देख रामचन्द्र जी का दल व्याकुल होगया, हनुमान ने रामचन्द्र जी से जाकर यह समाचार कह दिया, रामचन्द्र जी इस समाचार को सुनतेही मूर्छित होगए जब चेत में आए तब लक्ष्मण ने

रामचन्द्र से यह कहा।

शुभे वर्त्मनि तिष्ठन्तं त्वामार्यं विजितेन्द्रियम्।
अनर्थेभ्यो न शकनोति त्रातुं धर्म्मो निरर्थकः१९

बाल्मी० लं० कां० स० ८३ श्लोक १४॥

अर्थ—हे आर्य! आपकी जो कि शुभ मार्ग में स्थित और जितेन्द्रिय हैं विघ्नों से धर्म्म रक्षा कर सकता है यदि ऐसा न हो सो धर्म्म निरर्थक होता है।

रामचन्द्र जी लंका को जीत, उसका राज्य विभीषण को दे, आप अयोध्या में शासन करने लग गए. एक समय में उन्होंने निरपराधिनी जानकी को बाल्मीक ऋषि के आश्रम पर छोड़ने के लिये लक्ष्मण को आज्ञा दी, लक्ष्मण जानकी को मुनिके आश्रम पर छोड़ अयोध्या में आ, रामचन्द्र जी से यूं बोला।

आर्यस्याज्ञां पुरस्कृत्य विसृज्य जनकात्मजां।
गंगातीरे यथोद्दिष्टे बाल्मीक राश्रमे शुभे॥२०॥

बाल्मी० उ० कां०।

अर्थ–मैं आर्य की आज्ञा को मान, जनक सुता को गंगा के तट पर आपके बसलाए हुए वाल्मीकि के शुभ आश्रम पर छोड़ आया हूं।

(भाव) पाठकगण ! बाल्मीकि रामायण के थोड़े से प्रमाण मैंने लिखे हैं जिनसे स्पष्ट सिद्ध हो गया कि रामचन्द्रादि अनेक आर्य पुरुष और आर्या स्त्रियां उस काल में विद्यमान थीं हमने स्त्री विषय में प्रमाण इस लिये नहीं दिए कि जब मनुष्य सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर आज पर्यन्त आर्य विद्यमान थे और अब भी विद्यमान हैं इस बात को आपके आगे सिद्ध किया गया है, तो यह भी समझ लेना चाहिये कि स्त्रियां भी सृष्टि की उत्पत्ति काल से लेकर आज पर्यन्त अनेक आर्या थीं और अब भी हैं ग्रन्थ के विस्तार के भय से उनके नाम नहीं लिखे, अब थोड़े से महाभारत के प्रमाण लिखता हूं।

एक समय दुर्योधन ने वारणावत में पांडवों के निवासार्थ लाख का गृह बनवाया, फिर अपने मंत्री पुरोचन को यह बात सिखलाकर भेजा कि पांडवों को विश्वास

देकर लाक्षागृह को अग्नि लगा देना, पांडव भस्म हो जाएंगे, तब मेरा राज्य अकंटक हो जावेगा दुर्योधन की आज्ञा पा एक समय रात्रि के समय पुरोचन लाक्षागृह को अग्नि लगाने के लिये आया परन्तु विदुर ने अपना पुरुष भेजकर पांडवों को इस समाचार से प्रथम ही अभिज्ञ कर रक्खा था पुरोचन के उस गृह में प्रवेश करते ही भीम ने उसे देख उस गृह को अग्नि लगादी आप सुरंग के द्वारा सारे पांडव बन में चले गए वहां से एक ब्राह्मण के घर जा रहे एक दिन उस ब्राह्मण के घर पर कुन्ती रुदन का शब्द सुना, कुन्ती ने ब्राह्मण से रुदन का हेतु पूछा प्रतीत हुआ कि एक राक्षस उस नगर पर पड़ा करता था उस दिन उस ब्राह्मण के घर की बारी थी जिस से कि वह ब्राह्मण रोता था, ब्राह्मणी ब्राह्मण से कहती है।

स कुरुष्व मया कार्यं तारयात्मान मात्मना।
अनुजानीहि मामार्य सुतौः मे परिपालय ॥
उत्सृज्यापि मामार्यः प्राप्स्यसि अन्यामपि स्त्रियम्

ततः प्रतिष्ठितो धर्मो भविष्यति पुनस्तव ॥१॥

अर्थ–ब्राह्मणी बोली कि हे स्वामिन् ! आप मेरा कार्य करें आत्मा का आत्मा के द्वारा उद्धार करें आर्य मुझे जाने की आज्ञा दें, और मेरे दोनों पुत्रों की पालनाकरें। आर्य मुझको त्यागकर भी अन्य स्त्री को प्राप्त होजाएंगे, आपका धर्म्म फिर प्रतिष्ठित होजावेगा।

निषध देश में धर्मवीर राजा नल हुआ है, उसने अपने छोटे भाई पुष्कर से जूआ खेला, पुष्कर ने नल का सारा राज्य जीत लिया, नल अपनी पतिव्रता राणी दमयन्ती सहित वन को चला गया, राणी श्रांत होकर रात्रि को एक वृक्ष के नीचे सोगई, राजा राणी को सोई हुई को छोड़ चला गया, प्रभात समय में जब राणी की आंख खुली, तब यह वचन बोली।

यूथभ्रष्टामिवैकां मां हरिणीं पृथुलोचन।
न मानयसि मामार्य रुदतीं मरिकर्षण ॥२॥

महाभा०वन० प० अ० ६४ श्लो० २४।

अर्थ- हे बड़े २ नेत्रोंवाले ! हे आर्य ! हे शत्रुनाशक राजन् ! आप मुझ रोती हुई अकेली को धीरज नहीं देते जैसे यूथ से भूली हुई अकेली हरिणी को कोई धीरज नहीं देता ॥

(भाव) महाभारत में यद्यपि इस विषय के बहुत से प्रमाण हैं तथापि ग्रन्थ के बढ़ जाने के भय से थोड़े ही प्रमाण लिखे हैं, आपको इतने ही से निश्चय हो जाना चाहिए कि हमारा प्राचीन नाम आर्य है हिन्दु नहीं। अब गीता का प्रमाण देखो।

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषम समुपस्थितम् ।
अनार्य जुष्टमस्वर्ग्य मकीर्त्तिकर मर्जुन ॥१॥

भ०गी० अ० २ श्लो० २ ।

अर्थ-श्रीकृष्ण जी अर्जुन से कहते हैं कि हे अर्जुन ! ऐसे कठिन समय में यह दुष्ट विचार कैसे हुआ, आर्य लोग ऐसा विचार नहीं किया करते यह विचार तो सुख का नाशक और अकीर्त्तिदायक है ॥

(भाव) पाठकगण ! क्या आप श्रीकृष्ण जी के वचनों को भी मिथ्या मानेंगे ? जब श्रीकृष्ण जी अर्जुन को आर्य कहते हैं तो निश्चय होगया कि आर्य नाम प्राचीन है नवीन नहीं । अब काव्यों में से युधिष्ठिर विजय के प्रमाण दिखलाता हूं ।

य आप रमाचार्यं देवी च श्रिरां पुराण परमाचार्यम् । यमशुभसन्तोदान्तं परमेश्वर मुपदिशन्तिंसतोदान्तम् ॥

॥ १ ॥ यु० वि० का० अ० १ श्लोक० ७ ।

अर्थ–जिस आर्य भारत गुरु को लक्ष्मी की और वाणियों की देवी अर्थात् विद्या प्राप्त हुई । जिस भारत गुरु को प्राचीन, उत्तम आचार्य अशुभ कर्म्म से उत्पन्न जो व्यथा उसका नाशक शान्त स्वरूप और उत्कृष्ट लक्ष्मी का ईश्वर कहते हैं । युधिष्ठिरादि पांच भाइयों ने द्रोण और कृप से विद्या सीखी, इसबात का वर्णन वासुदेव कवि इस श्लोक में करता है ॥

अथ कुरु राजकुमारैः स्वगुणजितस्कन्द-दिनक राजकुमारैः द्रोणकृपाचार्याभ्यां प्राप्ति-

महास्त्रं गुरुकृपाचार्याभ्याम् ॥ २ ॥ यु० वि० अ० १ श्लो० २९ ॥

अर्थ–इससे पश्चात् कुरुराज कुमारों अर्थात् युधिष्ठिरादि ने जिन्होंने कि अपने गुणों से स्कन्द, सूर्य्य, विष्णु भूमि और कामदेव जीत लिए हैं, आर्य द्रोणाचार्य और कृपाचार्य से महत् अस्त्र और महती कृपा प्राप्त की ।

(भाव) सज्जनगण ! युधिष्ठिर विजय काव्य के इन दोनों श्लोकों में भारत गुरु ने द्रोण और कृप को आर्य लिखा है ॥

भट्ट नारायण कवि ने जो वेणी संहार नाटक बनाया है अब हम उस के थोड़े से प्रमाण लिखते हैं । जब नाटक का आरम्भ हुआ तो नाटकशाला से यह शब्द आया ॥

नेपथ्येऽपि* भाव ! त्वर्य्यताम् त्वर्य्यताम् एतं

---

* जिस स्थान में नाटक हुआ करता है उस स्थान का नेपथ्य कहते हैं ॥ नाटक में गाने और बजाने वालों को शैलूष कहते हैं ॥

खलु आर्य्य विदुराज्ञया पुरुषाः सकलमेव शैलषजनं व्याहरन्ति प्रवर्त्तयन्तास्य आतोद्यविन्यासादिका विधयः ॥ १ वेणी० सं० ना० अ० १ पृ० ७ ॥

अर्थ—नाटक स्थान में ऐसा शब्द हुआ कि हे भाव ! आप शीघ्रता कीजिये, ये पुरुष आर्य विदुर की आज्ञा से सारे शैलूषजन को कहते हैं कि गाना और बजाना आरम्भ करे ॥

जब नाटक का आरम्भ होगया तो मंडप में भीमसेन क्रुद्ध होकर सूपकार को झिड़कने लगा, और सहदेव भीम को शान्त करने लगा ॥

सहदेवः सानुनयम् आर्य्य ! मर्षय मर्षय अनुमतमेव नो भरतपुत्रस्यास्यवचनं पश्य ॥२॥ वेणी० सं० ना० अं० १ पृ० ९३ ॥

अर्थ-सहदेव कहता है कि हे आर्य ! अब शांति करें, इस भरत पुत्र का वचन तो हमारे अनुकूल है, देखिए ।

एक समय में कंचुकी भीमसेन के पास आया, भीमसेन और कंचुकी का परस्पर वार्त्तालाप होने लगा ।

भीमसेनः-आर्य मैत्रेय! किमिदानीमध्यवस्यन्तिगुरवः। कंचुकी-स्वयमेवगत्वा महाराजस्याध्यवसितं ज्ञास्यति कुमारः इति निष्क्रान्तः ॥ ३ ॥

वेणी सं० ना० अ० १ पृ० ६२।

अर्थ—भीमसेन कहता है कि हे आर्य! मैत्रेय! अब गुरु अर्थात् युधिष्ठरादि क्या निश्चय कर रहे हैं।

कंचुकी बोला कि कुमार अर्थात् आप स्वयं ही जा कर महाराज युधिष्ठिर का निश्चय जान लेंगे।

अब द्रोणाचार्य युद्ध में धृष्टद्युमन से मारा गया और उसके सूत अश्वसेन ने अश्वत्थामा से आकर द्रोणाचार्य की मृत्यु का समाचार कहा, तब अश्वत्थामा सुन कर रुदन करने लगा।

अश्वत्थामा अश्रूणि विमुच्य-आर्य! कथय कथय कथं तादृग्भुजवीर्य सागरस्तातोपिनामास्त मुपगतः? ॥ ४ ॥

अर्थ—अश्वत्थामा ने आंसू छोड़ कर सूत से कहा कि हे आर्य कहिए किस तरह भुजाओं के वीर्य का सागर मेरा पिता भी मरगया !

जब दूर्योधन के बड़े २ योद्धा मरगए तब दुर्योधन अपने पिता धृतराष्ट्र और माता गांधारी के पास जा बैठा, इतने में भीमसेन अर्जुन भी दुर्योधन को ढूंढते २ वहां जा पहुंचे, भीम ने दुर्योधन को कटु शब्द कहने आरम्भ किए जिन से दुर्योधन क्रोध से भड़क उठा, देखो ।

दुर्योधनः—आः दुरात्मन् ! एषनभवसि, इति सक्रोध मुत्थाय हंतु मिच्छति, धृतराष्ट्रो धृत्वोपवेशयति । भीमः क्रोध नाटयति, अर्जुन । आर्य किमत्र क्रोधेन ॥ ५ ॥

वेणी सं० ना० अ० ५ पृ० १६४ ।

अर्थ—दुर्योधन भीम से कहता है कि हे दुष्ट ! तू अब नहीं रहेगा, ऐसा कह कर क्रोध से उठ कर मारना चाहता है धृतराष्ट्र पकड़ कर बिठलाता है, भीम क्रोध करता है,

अर्जुन कहता है, कि हे आर्य ! भीम ! अब इस पर क्रोध मत कर।

एक समय भीम दुर्योधन का युद्ध हो रहा था, युधिष्ठिर और द्रौपदी बैठ बाट देख रहे थे कि कब भीमसेन दुर्योधन को मार कर आता है, इतने में दुर्योधन के पक्ष का एक पुरुष कपट मुनि का रूप बना युधिष्ठिर से आ कर कहने लगा कि भीम दुर्योधन के हाथ से मारा गया। उसके इस वचन को सुनते ही युधिष्ठिर और द्रौपदी अग्नि में जलने के लिए चिता चुनवा कर उस में बैठने को ही थे कि भीम दुर्योधन को मार लहू से हाथ भरे हुए युधिष्ठिर और द्रौपदी के पास पहुंचा, युधिष्ठिर व्याकुलता के कारण भीम को पहचान न सका, समझा कि दुर्योधन भीम को मार अब हम पर आया है, उठ कर बल से पकड़ने लगा, उस काल में भीम ने युधिष्ठिर से यह वचन कहा।

भीमः—अये कथमार्यः सुयोधनशंकया

निर्दय मामालिंगति, आर्य ! प्रसीद प्रसीद ॥६॥

बेणीं. सं० ना० अ० ६ पृ० २१२ ।

अर्थ–भीम आश्चर्य युक्त हो कर कहता है कि ओहो आर्य युधिष्ठिर दुर्योधन की शंका से मुझे निर्दयता से क्यों पकड़ता है हे आर्य ! प्रसन्न हूजिए प्रसन्न हूजिए ।

भ्रातृगण ! मैंने वेणीसंहार के थोड़े से प्रमाण निदर्शन मात्र लिखे हैं जिन से आपको विदित कराया गया है कि युधिष्ठिर भीम और विदुर आर्य थे । फिर आपको आर्य कहने से भय और हिन्दू कहने से प्रसन्नता क्यों होती है ?

राजा शूद्रक ने मृच्छकटक नाम नाटक बनाया है अब उस के थोड़े से प्रमाण लिखता हूं ।

सूत्रधारः–अलमनेन परिषत्कुतूहलविमर्दकारिणा परिश्रमेण, एवमहमार्यमिश्रान्प्रणिपत्य विज्ञापयामि यदिदं वयं मृच्छकटकं नामप्रकरणं प्रयोक्तुं व्यवसिताः ॥ १ ॥

अर्थ–सूत्रधार* कहता है कि सभा के बिगाड़नेवाला परिश्रम मत करो, मैं आर्यमिश्रों को प्रणाम करके विज्ञापन देता हूं कि हम इस मृच्छकटक नाम नाटक करने के लिए निश्चित है। मृच्छ०ना० अ० १ पृ० २।

जब नाटक का आरम्भ हुआ तब सूत्रधार नटी से कहता है, कि—

सूत्रधारः–अज्जे सा अदन्ते। नटी–आणवेदु अज्जो कोनिओओ अणुचिट्ठी-अदुत्ति ॥ २ ॥

अर्थ–सूत्रधार नटी से कहता है कि हे आर्ये! तेरा आना शुभ हो।

नटी बोली–कि हे आर्य आज्ञा करें कि मैं आपकी कौनसी आज्ञा पालूं।

एक समय में विदूषक चारुदत्त के पास गया।

---

* सूत्रधार एक नट होता है जो नाटक का आरम्भ करता है। ४ विदूषक एक वृद्ध पुरुष होता है जो राजाओं और धनाढयों के अन्तःपुर में आया जाया करता है।

विदूषकः—एसो अज्ज चारुदत्तो—ता जाव सम्पदं उवप्यामि ॥३॥ मृ० ना० अ० ३ पृ०१७।

अर्थ- विदूषक कहता है कि यह आर्य चारुदत्त है सो मैं अब इस के पास जाता हूं।

(भाव) मित्रवृन्द ! मैंने श्रव्य काव्यों में से केवल निदर्शन के लिए भट्टि और युधिष्ठिर विजय इन दो के और दृश्य काव्य जिन्हें नाटक कहते हैं उनमें से भी निदर्शनमात्र (नमूने के) तौर और वेणी संहार मृच्छकटक इन दो के ही प्रमाण दिये हैं, अधिक प्रमाण ग्रन्थ विस्तार के भय से नहीं लिखे।

जैन मत के ग्रन्थ में दो ही प्रकार के मनुष्य लिखे हैं, एक आर्य दूसरे म्लेच्छ। देखो जैन तत्वार्थ सूत्र ॥

आर्या म्लेच्छाश्च। जै० त० सू० अ० ३॥

अर्थ—मनुष्य दो प्रकार के हैं एक आर्य दूसरे म्लेच्छ।

अब मैं व्याकरण की रीति से आर्य शब्द सिद्ध करूंगा।

ऋ गति प्रापणयोः इस धातु से आगे।

ऋ हलोर्ण्यत् अ० अ० ३ पा० १। सू० १२४।

अष्टाध्यायी के इस सूत्र से ण्यत् प्रत्यय लगने

से अचोञ्णिति अष्टाध्यायी के अ० ७ पा० २ सू० ११५ इस सूत्र से ऋ के स्थान में आर् वृद्धि होने से आर्य शब्द सिद्ध होता है। (ऋच्छति जानाति ज्ञानं प्राप्नोतीत्यर्थः)

मित्रगण ! व्याकरण के अनुसार भी यह सिद्ध हुआ कि जो ज्ञान को प्राप्त होकर वेदानुकूल कर्म्म करते है वे आर्य हैं जो इन से विरुद्ध हैं वे दस्यु हैं।

अब हम दस्यु शब्द की व्युत्पत्ति व्याकरणानुकूल करके उसका अर्थ भी दिखलाएंगे।

दसु उपक्षये इस धातु से दस्यु शब्द सिद्ध होता है।

दस्यति वैदिक कर्म्माणि नाशयतीति दस्युः।

जो वेद विहित कर्म्मों का नाश करता है वह दस्यु है। अब मनुजी महाराजा ने दस्यु शब्द के जो अर्थ लिखे हैं वे भी लिखता हूं।

मुखबाहूरु पज्जानां वै। या लोके जातयोबहिः म्लेच्छ वाचश्चार्यवाचः सर्वेते दस्यवः स्मृताः।

मनु० अ० १० श्लो० ४५ ॥

अर्थ–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों की जो जातियां वेदों के धर्म्म से बाहिर होगई हैं चाहे उनकी वाणी म्लेच्छ भाषा है, चाहे आर्य भाषा वे सब दस्यु कहलाते हैं

हिन्दू शब्द संस्कृत भाषा का नहीं संस्कृत के किसी प्राचीन वा नवीन प्रतिष्ठित ग्रन्थ में भी हिन्दू शब्द लिखा हुआ नहीं मिलता। सुना गया है यह शब्द फ़ारसी भाषा का है इस के अर्थ अच्छे नहीं जिनको मैं लिखना उचित नहीं समझता फ़ारसी भाषा के जानने वाले आप ही जान जाएंगे जिस ने हिन्दू शब्द के अर्थ देखने हों वह फ़ारसी भाषा की गयासुलुगात नामक किताब में देख ले मुसलमान राजाओं के भारतवर्ष में आने से पहले हमारा हिन्दू नाम न था, हमारा वेदों शास्त्रों में प्रसिद्ध, और प्रतिष्ठित आर्य नाम था। अन्त में मेरी प्रार्थना है कि हे हिन्दू भाइयो अपना नवीन, अप्रतिष्ठित और दूसरे देश भाषा का हिन्दू नाम छोड़ प्राचीन, प्रतिष्ठित और मातृ भाषा तथा देव भाषा संस्कृत का आर्य नाम रक्खें ॥

शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

❀ वैदिक धर्म्म सम्बन्धी पुस्तकें ❀

चारों वेद मूल	५)	वेद विरुद्ध मत खण्डन	=)
,, वेदों की अनुक्रमणिका	१॥)	आर्य्योद्देश्य रत्न माला	)
ऋग्वेद भाष्य १० भाग	२१)	स्वीकार पत्र	)
यजुर्वेद भाष्य ४ भाग	१०)	पुरुषार्थ प्रकाश	१॥)
,, भाषा भाष्य	२।)	सन्ध्या पर लेक्चर	।)
अथर्ववेद भाष्य ६ काण्ड	११)	विजय दशमी	≠)
शत पथ ब्राह्मण मूल	४)	आर्य्य संगीत माला	-)
सत्यार्थ प्रकाश	१।)	पुराणतत्त्वप्रकाश ३ भाग	१॥-)
ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	१)	बाल्मीकि रामायण आर्य्य भाष्य	७)
संस्कार विधि	॥)	उपनिषद् आर्य्य भाष्य	७)
वेदांग प्रकाश १४ भाग	४।≡)॥	मानव धर्मसार	॥)
निरुक्त मूल	॥=)	नमस्ते प्रकाश	-)॥
पंच महायज्ञ विधि	-)॥	भारतीय शिष्य ईसा	=)॥
संस्कृत वाक्य प्रबोध	=)	दयानन्द चरित ला० लाजपत राय कृत	१।)
व्यवहार भानुः	=)	ओङ्कार की उपासना	-)
आर्य्यभिवनय बढ़िया	।=)	नवग्रह समीक्षा	-)
,, ,, गुटका	≡)	गुलदस्ता भजन	≡)
शास्त्रार्थ फीरोजाबाद	-)॥।	नीति संग्रह	।)
,, काशी	)॥।	याफ विधि	।)
गोकरुणा निधि	≠)	सुखी सन्तान	॥)
सत्यधर्म विचार	-)		
समोछेदने	)॥।		

अनुभ्रमोच्छेदन	)॥।
वेदान्तिध्वान्त निवारण	-)
वेद भाष्य (अग्नि सूक्त)	)॥
भ्रान्ति निवारण	-)।
स्वामी नारायणमत खंडन	-)॥
१ शुद्धी म० रामचन्द्र शास्त्री जी कृत	।)
२ उत्पाति पहला भाग	≡)
३ वीर्य्य रक्षा ...	⁄)
४ गर्भाधान विधि...	⁄)
५ ६ उपनिषद् भाष्य	१)
६ सत्यार्थ प्रकाश शब्दार्थ कोष	॥)
७ नारीधर्म विचार २भाग	१॥)
८ नरायणी शिक्षा (गृहस्थ)	१।)
९ संस्कार क्या हैं	=)
१० पुष्पा	-)॥
११ आर्य्य संगीत पुष्पावली	॥)
१२ ,, ,, ,, उर्दू	॥)
१३ न्याय भाष्य स्वामी दर्शनानन्द जी कृत	१।)
१४ सांख्य ,, ,,	॥।)
१५ वैशेषिक ,, ,,	१।)
पादरी साहब तथा मौंदू जाट का मुबाहसा	=)
व्याख्यान पंचक	॥।)
मूर्तिपूजा खण्डन	-)
यज्ञोपवीत शङ्का समाधि	)॥।
१६ आर्य सिद्धांत [मासिक पत्र के ११ अंक]	॥=)
१७ उपदेश मञ्जरी स्वामी दयानन्द जी के १५ व्याख्यान	।=)
१८ बालशिक्षा पहिला भाग	)॥
१९ व्याख्यान पंचक	॥।)
२० व्याख्यान मुक्तावली इस में ३० के लगभग व्याख्यान हैं	॥)
२१ न्याय आर्य्य भाष्य	२॥)
२२ वैशेषिक आ० भा०	२॥)
२३ वेदान्त आ० भा०	३)
२४ योग आर्य्य भाष्य	१।)
२५ सांख्य आर्य्य भाष्य	१॥-)
२६ मीमांसार्य्य भाष्य	८)
२७ मानवार्य्य भाष्य	३।)
२८ वैदिक धर्मप्रचारके साधन	⁄)
२९ मुनि चरितामृत संस्कृत (स्वामीजी का जीवन)	॥⁄)

* ओ३म् *

॥ आर्य्यमीमांसा ॥

सज्जनगण ! वेदों में मनुष्य दो प्रकार के लिखे हैं, एक आर्य्य दूसरे दस्यु, जो लोग परमेश्वर पर पूर्ण विश्वास रखते, विद्वान धार्म्मिक और वेदानुकूल कर्म्म करते थे उनको आर्य्य और जो, उन से विरुद्ध चलते, डाकू और चोर आदि थे उनका नाम दस्यु लिखा है, ऐसा ही मनु आदि ग्रन्थों में भी लिखा है, हिन्दू लोग अपने धर्म्म पुस्तक वेदादि को नहीं पढ़ते हैं इस लिए भूगोल में अपने धर्म्म से अनभिज्ञ जैसे हिन्दू लोग हैं वैसे कोई नहीं। हिन्दू लोग ऐसे भूले कि अपना प्राचीन आर्य्य नाम भुलाकर अपने आपको हिन्दू कहकर प्रसन्न होने लग गए, अब मैं आर्य्य शब्द की सिद्धि के लिए वेदों से थोड़े से प्रमाण देता हूं

विजानीहि आर्यान् येच दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासद् व्रतान्। शाकी भव यजमानस्य चोदिता विश्वेत्ताते सधमादेषु चाकन ॥ १ ॥

ऋ० मं० १ अ० १० सू० ५१ मं० ८।

अर्थ—राजा अपने सभापति से ऐसा कहे कि ऐ सभापते ! तू सब प्रकार के राज व्यवहारों को सिद्ध करने के लिए आर्य्य पुरुषों को जान, जो लोग दस्यु अर्थात् सब वेदोक्त उत्तम कर्म्मों को बिगाड़ने वाले हैं उनको तू मार वा ताड़ना कर, वा दण्ड दे, जो लोग सत्यभाषणादि व्रतों से हीन हैं उनको शिक्षा दे, यजमान अर्थात् यज्ञादि शुभ कर्म्मों के कर्त्ता को शुभ कर्म्मों में प्रवृत्त कर तू आप सार्थक्य वाला हो, मैं तेरे संग वा उपदेश से सुख सहित स्थानों में उन सब उत्तम कर्म्मों को चाहता हूं ॥ १ ॥

सनेम येत ऊतिभिस्तरन्तो विश्वा स्पृध आर्येण दस्यून् । अस्मभ्यं तत्त्वाष्ट्रं विश्वरूपमरन्धयः सारव्यस्य त्रिताय ॥ २ ॥

ऋ० म० २ अ० २ सू० ११ म० १९ ।

अर्थ—राजा अपने सेनापति से ऐसा कहे कि हे सेनेश ! जो हम लोग तेरी सेना की सहायता से सब शत्रुओं को तैरते हुए शारीरिक, मानसिक, और वाचिक सुख के लिए आर्य्य पुरुष के द्वारा दस्यु लोगों को जीतते हैं । तू

३० विजय दशमी =)	३२ ,, ,, उर्दू =)
३१ क्या हिन्दू जाति के लिए कोई आशा है =)	३३ जीवन यात्रा दो भाग =)॥
	३४ कुलियात लेखराम उर्दू १॥)

आर्य्य घरों तथा मन्दिरों की शोभा के लिए सुन्दर वेद मन्त्र तथा उपदेश आदि-

स्थूल अक्षरों तथा कई प्रकार के सुन्दर रंगों में छप हुए॥

गुरुमन्त्र अर्थ सहित $\frac{20-30}{2}$ -)॥	ओ३म्, नमस्ते, स्वागतम तथा
विश्वानिदेव ,, /)॥	शुभागमनम१शीटमें२०-२६ =)
हिरण्यगर्भः ,, -)॥	तेजो असि० ,, $\frac{22-29}{2}$)॥
धर्म के दस लक्षण ,, -)॥	मनुष्य के जीवन तथा मृत्यु के
प्राणायाम मन्त्राः ,, -)॥	प्रश्न $\frac{22-29}{2}$)॥
अग्नि मीड़े० ,, -)॥	भद्रं कर्णेभि० ,,)॥
अभयं मित्रा० ,, -)॥	यथे मामवाचं० ,,)॥
ओ३म् देवनागरी अ० ,, -)॥	सर्वेशा मेवदानानां ,,
उर्दू तथा अंग्रेजी ,, ,, -)॥	तथा ओ३म् झंडेवाला१७-२७)॥
नमस्ते देवनागरी ,, ,, -)॥	तस्वीर स्वामीजी समाधीवाली ।)
यम नियम गोलदायरे१८-२२ =)	,, ,, रंगीन ।)
नोट वेदमन्त्र-)॥वाले रूल कपड़े	१४ ,, द्वितीय अंग)।
तथा रौरांग वाले ।/)	१५ आत्म शिक्षा)।
एक के हिसाब से दिये जाते हैं॥	१६ आत्मिक बल)।
तथा तस्वीरें और यम नियम ॥)	१७ धर्म्म शिक्षा)।
ब ।≡)	१८ गुरुकुल)।

व्याख्यान माला संस्कृत में ॥)
वैदिक सन्ध्या भाषा टीका)।
,, ईश्वर स्तोत्रम ।)
,, प्रार्थना पञ्च विंशतिः)॥

१ ईश्वर विचार १म भाग)।
२ ,, २य भाग)।
३ ईश्वर प्राप्ति १म भाग)।
४ ,, २य भाग)।
५ ,, ३य भाग)।
६ वेदों की आवश्यकता)।
७ वेद किस पर प्रगट हुए)।
८ षट् शास्त्रों की उत्पत्ति)।
९ ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र की व्याख्या)।
१० क्या वेदों के पढ़ने का अधिकार सब को नहीं)।
११ सृष्टि प्रवाह से अनादि है)।
१२ स्थावर में जीव विचार)।
१३ अविद्या का प्रथम अंग)।
१९ रामायणसार)।
२० मोहमुद्गर)।
२१ अकाल मृत्यु मीमांसा)।
२२ स्वामी दयानन्द का उद्देश्य ,।
२३ कौपीनपंचक, यतिपंचक)।
२४ श्राद्ध व्यवस्था)।
२५ ईसाई मत परीक्षा)।
२६ महा अन्धेर राग्नि)।
२७ भोगवाद)।
२८ प्रश्नोत्तरी)।
२९ वर्ण व्यवस्था)।
३० गंगा की नींद)।
३१ कर्म व्यवस्था)॥
३२ उन्नीसवीं सदी का सच्चा बलि दान)॥
३३ क्या हम जीवित है ?)।
३४ ईसाई विद्वानों से प्रश्न)।
३५ श्राद्ध विचार)।
३६ हम मानते हैं)॥

बजीरचन्द्र शर्म्मा अध्यक्ष वैदिक पुस्तकालय,
...लाहौर रोड—लाहौर।

परिग्रहण क्रमांक 4918